VOL- VII | ISSUE- VII | JULY | 2020 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 6.293 | ISSN 2349-638x

मानव जीवन में भक्ति–संगीत का महत्व

विशाल अग्रवाल,
रिसर्च स्कॉलर, संगीत विभाग,
डी ई आई आगरा।

भक्ति :– विद्वानों के अनुसार जीवन के लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति के लिये मन, वचन एवं कर्म से ईश्वर भक्ति अति आवश्यक है। भक्ति से अभिप्राय यह है कि ईश्वर के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना को ही भक्ति कहते हैं। 'भक्ति' जो अपने इष्ट के प्रति होती है। भक्ति की परिभाषा **'भगवत् गीता'** में इस प्रकार दी गई है कि मन एवं बुद्धि से ईश्वर में प्रेमपूर्वक सम्मान ही भक्ति है। इसी प्रकार **'नारद भक्ति सूत्र'** में भी कहा गया है कि ईश्वर के प्रति अमृतरूपा प्रेम को भक्ति का रूप तथा ईश्वर के महात्म्य का ज्ञान एवं सतत् स्नेह को भक्ति बताया गया है। जिसका अर्थ है कि ईश्वर का महात्म्य ज्ञान रखते हुये उसके प्रति प्रेम एवं श्रद्धा के साथ स्वयं को पूर्ण समर्पित करना ही भक्ति है। भक्ति की उत्पत्ति के बारे में कहा जाये तो प्राप्त जानकारी के अनुसार भक्ति शब्द 'भज्' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगाने से बना। जिसमें 'भज्' धातु का अर्थ है सेवा करना तथा 'क्तिन्' प्रत्यय का अर्थ है प्रेम। अतः इसका सम्पूर्ण अर्थ यह बना – प्रेमपूर्वक सेवा करना ही **'भक्ति'** है। ईश्वर की उपासना करना, उनकी सेवा करना तथा ईश्वर के चरणों में स्वयं को पूर्णरूप से समर्पित कर देना ही 'भक्ति' कहा जाये तो यह गलत नहीं होगा। भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। जहाँ दो हृदयों का एकीकरण हो, वही भक्ति कहलाता है। इसका तात्पर्य है कि अपने इष्ट के प्रति स्वयं को पूर्णरूप से उसके चरणों में समर्पित कर देना ही भक्ति है। भक्त की भगवान के प्रति निश्छल भावना ही भक्ति कहलाती है। यही कारण है कि भक्ति में गम्भीरता एवं तन्मयता का वास होता है। भक्ति मानव के जीवन में विशेष महत्व रखती है। भक्ति के द्वारा काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार जैसे शरीर एवं आत्मा को क्षीण करने वाले सभी कारकों पर अंकुश लगाया जा सकता है। भक्ति के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य अमरता प्रदान कर सकता है तथा आत्मा और शरीर को क्षीण करने वाले कारकों से मुक्ति पा सकता है। तथा भक्ति के मार्ग को अपनाकर मानव का मन एक ऐसे लोक में निवास करने लगता है जहाँ न कोई स्पर्धा है और न ही कोई संघर्ष।

संगीत :– संगीत का मानव जीवन में विशेष महत्व है। हमारे मावन जीवन में संगीत को एक आराधना के रूप में माना जाता है। विद्वानों के मतानुसार संगीत कला उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानव जाति। मनुष्य के जीवन से संगीत का सम्बन्ध जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ा है। कहा जाता है कि प्राचीन समय से ही ऋषि–मुनि ईश्वर की आरधना संगीत के द्वारा किया करते थे। कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति का इतिहास अति प्राचीन है। इसका आरम्भ वैदिक काल से माना जाता है। जितनी प्राचीन हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता है। उतना ही प्राचीन संगीत को माना जाता है। विद्वानों के अनुसार जब सम्पूर्ण विश्व में अज्ञानता का अंधेरा छाया हुआ था तब उस समय भारत में ज्ञान का प्रकाश चारों तरफ फैला हुआ था। सभ्यता एवं संस्कृति में भारत प्रारम्भ से ही पूरे विश्व का गुरू रहा है। जो अपने चमत्कारिक बुद्धि कौशल से सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित करता रहा है। यह बात सर्वविदित है कि जितनी यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति गौरवमयी रही है उतना ही हमारे देश का संगीत। भारतीय संगीत प्राचीन काल से ही धर्म के संरक्षण में फलता–फूलता रहा है। अतः भारत के संगीत में धार्मिक आस्थाएँ एवं विश्वास प्रकट होते प्रतीत होते हैं।

संगीत का अर्थ एवं परिभाषा :– संगीत शब्द 'गी' (गै) धातु में 'सम' उपसर्ग तथा 'क्त्' प्रत्यय लगाकर बना है। अर्थात् सम+गी+क्त् = संगीत। इसलिये संगीत का शाब्दिक अर्थ हुआ – भलीभांति गाने योग्य। परन्तु इस युक्ति के अनुसार संगीत का पूर्ण

अर्थ स्पष्ट नहीं होता हैं। जन सामान्य के अनुसार गाने–बजाने को ही संगीत कहा जाता है। परन्तु देखा जाये तो यह अर्थ भी संगीत का बाह्य पक्ष ही दर्शाता है। संगीत शब्द पर दृष्टि डाली जाये तो भारतीय संगीत के इतिहास पर विचार करते हुये यह स्पष्ट होता है कि संगीत शब्द के स्थान पर 'गीति', 'सम', 'गन्धर्व' आदि संज्ञायें प्रचलन में थी। कहा जाता है कि 'बृहद्देशी' के रचनाकाल के समय तक संगीत शब्द अपने अस्तित्व में आ चुका था। संगीत का अंग्रेजी शब्द 'म्यूजिक' विदेशों में प्रयोग किया जाता है। म्यूजिक के अन्तर्गत उन सभी कलाओं का समावेश है, जिनकी अधिष्ठात्री देवी 'म्यूज' हैं। इस दृष्टि से इसमें काव्य एवं कला का समावेश होता है।

संगीत की परिभाषा :– परिभाषा की दृष्टि से गीत, वाद्य एवं नृत्य के समावेश को ही संगीत कहते हैं। प्राचीन ग्रन्थकारों के अनुसार गीत को प्रधान माना गया है। वाद्य को गीत का अनुकर्ता तथा नृत्य को गीत एवं वाद्य का अनुकर्ता माना गया है। कालान्तर में गीत के साथ–साथ वाद्य तथा कला का स्वतन्त्र रूप से अभ्युदय हुआ। कंठ संगीत एवं वाद्य संगीत स्वतन्त्र रूप से प्रयोग में आने लगे। इसलिये संगीत की परिभाषा अपने अन्तरंग में ही बदलने लगी। आधुनिक समय में भी देखा जाये तो गीत, वाद्य एवं नृत्य के समावेश को ही संगीत कहते हैं। यह कहा जाता है परन्तु व्यवहारिक रूप में यह देखा जाता है कि संगीत की शिक्षण–संस्थाओं में गीत–वाद्य के समायोजन को संगीत समझ लिया जाता है। एक महान विद्वान जिन्होनें भारतीय संगीत एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जिनका नाम 'विष्णु नारायण भातखण्डे' है, इनके अनुसार गीत, वाद्य एवं नृत्य इन तीनों का समावेश ही संगीत है। इनके अनुसार तीनों कलाएँ स्वतन्त्र है परन्तु इसमें गीत को प्रधान बताते हुये इन तीनों का समावेश संगीत में ही किया गया है। **'संगीत चिन्तामणि'** के अनुसार– गीत, वाद्य, नृत्य तीनों के मिलन को ही संगीत कहते हैं। इसमें भी 'गीत' को ही प्रधान तत्व माना गया है। इनके अनुसार **'वाद्य गीत'** का अनुकरण करता है तथा नृत्य वाद्य का। **'संगीत समयसार'** के अनुसार संगीत की परिभाषा पर दृष्टि डालें तो संगीत गायन, वादन एवं नृत्य के माध्यम से वांछित भाव उत्पन्न करने वाली रचना होगी। वास्तव में माना जाये तो संगीत स्वर, लय तथा ताल के एक संतुलित मिश्रण की सुरीली रचना है। जो किसी के भी मन को आनन्दमय कर सकती है। **कालीदास** के **'मेघदूत'** में 'संगीताचार्य' के उपादानों में गीत, वाद्य, नृत्य की आवश्यकता कही गई है। **कौटिल्य** के अर्थशास्त्र में भी सहचरी कलाओं के रूप में गीत, वाद्य, नृत्य तथा नाटक का उल्लेख किया गया है।

संगीत का उद्गम एवं विकास :– भारत के वैदिक दर्शन के अनुसार इस पूरी सृष्टि की उत्पत्ति 'ओम' शब्द से हई है। ऋषि, मुनि तथा विद्वानों के अनुसाार भी सृष्टि का उत्पन्नकर्ता नाद ब्रह्म ही है। विद्वानों के अनुसार नाद ब्रह्म से ही संगीत की उत्पत्ति मानी गई है। ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु में नाद व्याप्त है। अतः इसी नाद को ही 'नाद ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। संगीत की सृष्टि नाद से मानी गई है। उदाहराणार्थ – जिस प्रकार मिट्टी या पत्थर से प्रतिमा, रंग–रोगन से चित तथा ईटों से भवन तैयार होते हैं उसी प्रकार संगीत का उपादान नाद को माना गया है। इसे नाद ब्रह्म या शब्द ब्रह्म भी कहते हैं। विद्वानों के अनुसार, प्राचीन ग्रन्थ तथा वेदों में कहा गया है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण नाद अर्थात् ध्वनि से हुआ है। ऐसा कहा जा सकता है। कि पूरे ब्रह्माण्ड में शायद ही कोई ऐसी आदिम जाति हो, जिसका कोई संगीत न हो। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है शायद ही कोई ऐसी क्रिया या कार्य हो जिसे संगीत के बिना चलाया जा सके। अर्थात् संगीत मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है चाहे वह शाब्दिक हो या आध्यात्मिक। संगीत मानव की एक सार्वभौमिक भाषा है। भारतीय संगीत में उद्गम सम्बन्धी जो मान्यतायें है उनमें प्राचीन काल से ही धर्म का प्रभाव रहा है। यदि संगीत के अतीत पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होगा कि भारतीय संगीत एवं धर्म का एक अटूट सम्बन्ध सा प्रतीत होता है। पुराण विद्या के अनुसार नाद भगवान शिव के तम्बूरे से उत्पन्न हुआ, कहा जाता है। जिन्हें नृत्य का देवता तथा नटराज भी कहा जाता है। अतः इन सभी बातों से स्पष्ट हो जाता है संगीत का इतिहास अति प्राचीन है।

मानव जीवन में भक्ति–संगीत :– भक्ति–संगीत को परिभाषित करते हुये यह कहा जा सकता है कि भक्ति का संगीत से सम्बन्ध एक अटूट सम्बन्ध है। जिससे इसमें ईश्वर के प्रति प्रेम का आभास होता है। कहा जाता है कि प्रारम्भ से ही मनुष्य की आस्था ईश्वर से रही है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है

कि भक्ति की भावना उस समय मनुष्य की भीतर आई होगी जब उसके द्वारा किया गया कार्य उसके वश से बाहर हो गया होगा तथा तब उसने थक, हार कर एक अदृश्य शक्ति का आवहन किया होगा, जिसके नाम मात्र आभास से उस व्यक्ति का कार्य सफल हो गया होगा तथा यहीं से मनुष्य को ईश्वर के होने को प्रमाण मिला होगा तथा धीरे–धीरे ईश्वर के प्रति भक्ति का प्रचार सभी में हो गया होगा। इतिहासकारों के अनुसार, प्राचीन समय में ईश्वर की भक्ति ऋषि–मुनियों द्वारा की जाती थी। प्रारम्भिक समय में भक्ति सामान्य मनुष्य के वश में नहीं थी। क्योंकि इसके लिये आरम्भ से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना पड़ता था एवं जप, तप, ध्यान आदि के द्वारा कठोर साधना करनी पड़ती थी, जो सामान्य मनुष्य के वश से बाहर थी। ऋषि, मुनियों का अधिकतर समय ईश्वर की साधना करने में ही व्यतीत हुआ करता था तथा बचा हुआ समय भिक्षा मांगने में। परन्तु जब धीरे–धीरे समयानुसार संगीत के माध्यम से ईश्वर की भक्ति की जाने लगी, तब इसमें सामान्य व्यक्ति का जुड़ाव होने लगा तथा भक्तों की संख्या में धीरे–धीरे बढ़ोत्तरी होने लगी तथा सारे समाज में भक्ति–संगीत का प्रचार तीव्र गति से फैलता चला गया। तथा यहीं से भक्ति व संगीत एक दूसरे के पूरक माने जाने लगे। ईश्वर की भक्ति के लिये संगीत को यज्ञादि में प्रयोग किये जाने के कारण भक्ति–संगीत का विकास काफी तीव्र गति से हुआ। वेदों में भी जब ईश्वर की उपासना की जाती थी, तो उसमें प्रयुक्त होने वाले मंत्र उच्चारण की स्वर लयबद्ध कर के गाने से भी भक्ति संगीत का प्रचार बढ़ा। वेदों में भक्ति–संगीत का मूल प्रभाव है। भक्ति–संगीत के जुड़ाव से मनुष्य का जुड़ाव भी भक्ति–संगीत के द्वारा ईश्वर से हो गया। तथा सामान्य मनुष्य का भक्ति–संगीत के माध्यम से ईश्वर से जुड़ाव बढ़ता ही चला गया। यह जुड़ाव इसलिये भी था क्योंकि ईश्वर की भक्ति में संगीत के माध्यम से एक भाव उत्पन्न होता था, जो मनुष्य के हृदय को छूता हुआ उसे ईश्वर से जोड़ रहा था। इसी भाव से मनुष्य ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाता था तथा ईश्वर की भक्ति में खो जाता था। इसी कारण सामान्य मनुष्यों की संख्या में लगातार भक्ति–संगीत के प्रति उत्सुकता बढ़ती चली गई। प्रारम्भ में ईश्वर की भक्ति इकतारा नाम के एक वाद्ययंत्र के साथ की जाती थी, जिससे एक स्वर उत्पन्न होता था तथा जिसके माध्यम से संगीतमय भक्ति की जाती थी। सभी जन थक हार कर जब अपने कार्य से मुक्त होकर जब मिलजुलकर ईश भक्ति में लग जाते थे, तो यही संगीतमय भक्ति उन थके हुये लोगों को मानसिक शान्ति प्रदान करती थी। भक्ति–संगीत के भाव से उस समय मनुष्य इतने भाव विभोर हो जाते होगें कि धीरे–धीरे उन्हें ईश्वर की भक्ति में आनन्द आने लगा होगा। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि इसी कारण से लोगों में ईश्वर के प्रति आस्था भक्ति–संगीत के माध्यम से बढ़ी होगी। धीरे–धीरे समय व्यतीत होने पर भक्ति–संगीत के वाद्ययंत्रों में बदलाव आये। धीरे–धीरे भक्ति–संगीत में ढोलक, मंजीरे, खड़ताल आदि का प्रयोग होना शुरू हो गया। विद्वानों के अनुसार लोग अपने कार्य से मुक्त होकर सायंकाल ईश्वर की वंदना करने आते थे तथा एकजुट होकर गा–बजाकर भक्ति–संगीत का आनन्द उठाते थे। इसी आनन्द के कारण वह अपनी थकान भूल जाते थे तथा आनन्द विभोर होकर अपने–अपने घर लौट जाते होगें। समय के साथ–साथ भक्ति–संगीत का स्वरूप भी बदलता रहा, परन्तु मनुष्य का भक्ति–संगीत से जुड़ाव जैसे प्रारम्भ में था वैसा ही रहा। इतिहासकारों के अनुसार भारत पर जब मुगलों का आक्रमण हुआ तब उनके साथ सूफी संतों का आगमन भी हुआ। ये सूफी संत भक्तिगान संगीत के माध्यम से करते थे जो भारतीयों को पसन्द आने लगे थे। इनकी संगीतमय भक्ति से प्रभावित होकर भारतीय लोग इनकी ओर आकर्षित होने लगे तथा सूफी भक्ति में आनन्द की अनुभूति करने लगे। यद्यपि मुगलों का आशय हिन्दू संस्कृति को नष्ट करना था। परन्तु भक्ति–संगीत का प्रभाव वह भारतीयों के मन से निकाल न सके। बारहवीं शताब्दीं में जब विदेशियों के आक्रमण को हमारा देश झेल रहा था। उस समय भी भक्ति–संगीत का प्रभाव भारतीयों के मन पहले की भांति ही था। विदेशियों ने हमारे भक्ति–संगीत पर अपना प्रभाव जमाना चाहा परन्तु वे सफल न हो सके। इतिहासकारों के अनुसार बारहवीं शताब्दी में जब देश पर विदेशियों का आक्रमण हो रहा था तब भक्ति–संगीत का हनन करने की पूरी कोशिश की जा रही थी। तब इसे जयदेव ने आगे बढ़ाया तथा जयदेव ने श्रीकृष्ण तथा राधा की प्रेम लीलाओं का वर्णन स्वर लय द्वारा भक्ति–संगीत का सहारा लिया, जिसका यह परिणाम हुआ कि लोगों का रूझान भक्ति–संगीत पर

और दृण हो गया तथा इसके माध्यम से भक्ति–संगीत का प्रचार भी तीव्र गति से हुआ। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि प्राचीन काल से लेकर आज मानव के जीवन में कई परिवर्तन हुए परन्तु भक्ति–संगीत का प्रभाव जितना मानव पर प्राचीन समय में था, उतना आधुनिक समय में है। सामान्य मनुष्य का ईश्वर से जुड़ाव का मुख्य कारण भक्ति–संगीत ही है, जिसकी वजह आज प्रत्येक व्यक्ति भक्ति–संगीत के माध्यम से ईश्वर से जुड़ा है।

संदर्भ सूची –

1. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, निबंध संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस, नवम्बर 1989

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com